पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना के दीक्षांत समारोह में महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान का सम्बोधन

(दिनांक 15.12.2022, समय–11:00 बजे पूर्वाह्न, स्थान–एस०के० मेमोरियल हॉल, पटना)

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में शामिल होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

इस विश्वविद्यालय की स्थापना के कुछ वर्ष ही हुए हैं तथा यह सफलता की नई ऊँचाइयों को पाने के लिए लगातार प्रयासरत है। कोरोना महामारी के दौरान पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा ऑनलाईन कक्षाओं का संचालन तथा ऑनलाईन सामग्री तैयार कर विद्यार्थियों को सुलभ कराना अत्यंत सराहनीय है।

दीक्षांत समारोह के अवसर पर सर्वप्रथम मैं विभिन्न संकायों एवं पाठ्यक्रमों में उपाधि–पत्र एवं पदक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें देता हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

दीक्षांत समारोह में उपाधि–पत्र प्राप्त करना प्रत्येक विद्यार्थी का स्वप्न होता है। अतः आपके लिए आज का दिन और यह आयोजन अधिक महत्त्वपूर्ण है।

इस विश्वविद्यालय में आप शिक्षा प्राप्ति के लिए आये थे और अब समाज एवं राष्ट्र की सेवा के लिए जा रहे हैं। आज से आपके जीवन का एक नया अध्याय आरंभ हो रहा है। अब आपके सामने पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन के साथ–साथ देशवासियों, विशेषकर समाज के गरीब लोगों की सेवा का महान लक्ष्य होना चाहिए। इस राह में अनेक कठिनाईयाँ एवं चुनौतियाँ आयेंगी, जिनसे निपटने में आपका व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास, ईश्वर पर भरोसा तथा गुरूजन एवं माता–पिता से प्राप्त शिक्षा एवं उनके आशीर्वाद आपके सहायक बनेंगे।

जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए बेहतर शिक्षा सभी के लिए बहुत आवश्यक है। यह हममें आत्मविश्वास विकसित करने के साथ–साथ हमारे व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायता करती है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्रिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके। डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम का सुझाव था कि शिक्षण न केवल पाठ्यपुस्तकों पर आधारित होना चाहिए, बल्कि योग्यता और गुणवत्ता पर ध्यान देने के साथ–साथ एक दूसरे के साथ संवाद करने वाला और अनौपचारिक होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में इन बातों का ध्यान रखा गया है तथा रोजगारपरक शिक्षा एवं कौशल विकास पर जोर देने के साथ–साथ संवैधानिक एवं नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता पर भी बल दिया गया है। मुझे पूरा विश्वास है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन और इसके उद्देश्यों की पूर्ति में पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय की सक्रिय भूमिका होगी। बदलते समय के साथ शिक्षा का तंत्र भी पूरी तरह से बदल रहा है। अतः प्रासंगिक बने रहने के लिए शिक्षकों को भी नवीनतम जानकारी रखनी होगी तथा नई तकनीकों को नियमित रूप से सीखना होगा।

मेरी कामना है कि पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय शिक्षा का महत्त्वपूर्ण केन्द्र बने तथा यहाँ के विद्यार्थीगण उच्च आदर्शों पर चलते हुए राष्ट्र के विकास में अपना महती योगदान दें।

दीक्षांत समारोह के अवसर पर मैं एक बार पुनः पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय परिवार को बधाई देता हूँ और छात्र–छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। बहुत–बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द।

***